रीती गठरी

वधव्य क श्वत परिधान म लिपटी कविता आज वरसा वाद एक यातना स उवरकर उस शाति का अनभव कर रही थी जिस पान क लिए वह दिन रात छटपटाती रही थी। वीस वर्षा की दस्सःह लम्वी यात्रा। जिसम चलत गिरत उठत वठत उसक कदम इस कदर भारी हा चल थ कि उसक पार्थिव शरीर का वाझ भी उठा पान म अपन का असमर्थ पा रह थ। वह उसी दहलीज पर वठकर अपन अतीत क पन्न पलटन लगी जिस दहलीज की लक्ष्मण रखा का पार करत ही उसक सम्पर्ण जीवन क सनहर स्वप्ना की आहति द दी गई थी।

घर भर म खशी की लहर दाड गई कि कविता क भाग्य म दल्हा वहत सन्दरह। उसका कद छः फट ह एवम् वह किसी भी व्यसन का आदी नही ह। यह सव सनकर मन ही मन कविता खिल उठी। उसकी कल्पनाए उडान भरन लगी।

शगन की रस्म परी हई कि भीतर स्त्रिया म कछ काना फसी सी हई \हाय हायख़इतनी सन्दर लडकी आर यह ।तभी किसी क डाटन व गस्सा हान की आवाज भी काना म पडी। शादी व्याहा म एसा भी कछ कछ हाता रहता ह सा वात आई गई हा गई। पता करन पर मालम हआ कि दल्ह की वहन आर भाभी म किसी वात का लकर तकरार हा गई थी। खर किसी न खास ध्यान नही दिया। निश्चित समय पर विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हा गया। दल्हन रशमी जाड म लिपटी विदा कर दी गई। दल्ह की मा जीवित नही थी अतःवडी वहन ही हर आर पधान थी। वही सार शगन कर रही थी। अरमाना भरी रात कमर क वीचा वीच पलग पर गठरी वनी वठी कविता अपन नवजीवन क कर्णधार अपन स्वामी क आन का वहत वसवी स इतजार कर रही थी कि अचानक धक्क स द्वार क पट खल। उसका कामल मन एकवारगी काप उठा। व क्षण किसी आन वाल अनिष्ट का पर्व सकत स लग। तरह तरह की आशकाए उसक भीतर मडरान लगी। चतनाशन्य सी वह नियति क अजीवागरीव खल का हिस्सा वन रही थी। उस ता यही मालम था कि महश शराव नही पीत। फिर यह शरावी सी चाल ®कि तभी उद्वग स भर कविता का पल्ल खीचन का यत्न करत हए उसक सपना का राजकमार उसका पल्ल हाथ म पकड हए उसक सामन ही गिर पडा। वह थर्र! थर्र काप रहा था।

हानी का खल अभागिन कविता विना पल्ल क ही वाहर की आर मदद क लिए भागी। घर महमाना स भरा था। पलक झपकत ही सव लाग वहा एकत्रित हा गए। कविता की जठानी ननद पर चीख ही पडी फ़ा न कहती थी कि इतनी प्यारी लडकी का जीवन वर्वाद मत करा आखीर वही हआ ना जिसका डर था। √ कि तभी ननद न भाभी का मह अपनी हथली स दवाच कर वद कर दिया। वा आग नही वाल पाई। कविता क काटा ता खन नही। पल भर म सारी असलियत उसक सामन आ गई थी। उस ननद रूपी स्त्री क पति उसका मन वितृष्णा स भर उठा। सख तालाव की तलहटी जसी उसकी आखा की पतलिया दर्द भर भय स निश्चष्ट हा गई आर वह सहमकर भाभी क आचल म दवक गई। जिस वगान घर का वह अपनान आई थी वहा कवल भाभी म उस अपनापन लगा। डवत का तिनक का सहारा।

डाक्टर आया महश का दवाइया दी गई। नीद का इजक्शन दकर सला दिया गया। रात सव की आखा म कटी। काना फसी भी हर आर चल रही थी। जितन मह उतनी वात

रिवाज क अनसार दल्हन का भाई उस मायक लिवान क लिए दसर दिन सवह ही आ पहचा। विदा करत समय ननद रूपी स्त्री न कविता स हाथ जाडकर मिन्नत्त की कि वा रात की वात

©Veena Vij

का राज ही रहन द।मायक म किसी का ना वताए।क्याकि अव इस परिवार की इज्जत उसकी अपनी इज्जत ह।इसका ध्यान उसीन रखना ह।उधर कविता की सास अटकी थी कि किसी तरह उस इस घर स छटकारा मिल ता इन पागला का ता जीत जी कभी मह नही दखगी।मन ही मन सव दवी दवताआ की पजा अर्चना करती वा जव मा क घर पहची ता उसकी जान म जान आई।सामन ही मा का पाकर वा मा क गल लगकर खव फट फट कर राई।वा भीतर ही भीतर भय स सर्द हा रही थी।एक ही रात म उसक यावन क सार स्वप्न टटकर विखर चक थ।एक उदास सी हसी जा एक खाली जगह स उठकर दसरी खाली जगह पर खत्म हा जाती ह आर वीच की जगह का भी खाली छाड जाती ह उसक चहर पर घर कर गई थी।उसन भीतर स अपना कमरा वद कर लिया।अपनी घायल आत्मा का वाझ उठाए वह धरती पर निःस्पद पड गई।वाहर सव पकार रह थ व हरान परशान थ।काई नही जानता था कि वात क्या ह।मा न लाख दहाई दी ता कविता न द्वार खाला।उसकी हालत दखकर ता मा तडप उठी।कविता न कहा कि वह ससराल नही जाएगी महश का पागलपन क दार पडत ह।उसन सारा किस्सा सनाया व कहा कि अभी कछ नही विगडा ह।अभी उसन उस छआ तक नही ह।लकिन हमारा मध्यवर्गीय समाज आर इसकी मजवरिया।जिस विश्वास आर भरास की मजवत रस्सी का थामकर अपन जीवन की डगमग नय्या का कविता किनार पहचान लगी थी उसन ता उस मझदार म ही डवन का छाड दिया।इक तिनक का सहारा भी उस नही मिला।पिताजी न सहारा दन क वदल उसक सामन अपनी दा आर जवान वटिया की मजवरी जताई।कविता अवसन्न सी कभी मा ता कभी पिताजी का चहरा तक रही थी।अथाह पीडा स उसका चहरा पीला व जर्द हा गया था।घर म काई भी न था जा इस दख की घडी म उसका साथ दता।मध्यवर्गीय परिवारा म इसी पकार अपनी आर्थिक या सामाजिक मजवरिया जताकर वटिया का वलि का वकरा वना दिया जाता ह।चाथ ही दिन कविता क तथाकथित पति व जठ उस लिवान आ गए।राती विलखती जमीन पर लाटती कविता की एक न चली।मा न भी पति परमश्वर का इशारा समझकर सीन पर पत्थर रख लिया।छाड दिया कविता की जीवन की नय्या का भाग्य क भरासरु डवन या कभी किनारा पान की आस म।पागल महश क पल्ल मढकर उस भज दिया गया ससराल।दिखन का वह निर्विकार वझा सा चहरा था।लकिन वह चप्पी का राना था।अलग अलग सासा क वीच विधा हआ।हर सास म अभी भी पिताजी की मजवरिया सग सास ल रही थी।

दिखन म ता महश असाधारण व्यक्तित्व का मालिक था।डाक्टर्स न वताया कि अति पसन्नता या असीम दख की स्थिती म उसक दिमाग का सतलन विगड जाएगा।एस म महश खाना खान वठता ता वीस वीस राटिया खा जाता।नहान जाता ता चार घट नहाता ही रहता।कई वार वाहर आन पर वह वखार स तप रहा हाता।कभी अपन कपड निकालन लगता ता सारी अल्मारी ही खाली कर दता।जव कभी वह साधारण स्थिती म हाता ता कविता का उस पर तरस भी आता।एकाध वार उसन महश स पछन का यत्न किया ता महश न विना साच समझ उस मार मार कर अधमरा कर दिया।

शादी की पहली साल गिरह पर कविता न एक नन्ह मन्न वालक का जन्म दिया।जिस परूष स नाता जाडन म उस कष्ट था वही उसक पत्र का पिता वन चका था। अभी तक जीवन का वह टट हए टकडा म जी रही थी। आज पहली वार कविता का अपन सम्पर्ण हान का आभास हआ।उसकी आखा म एक भीगी हई चमक थी जा खशी क आसआ क वाद चली आती ह।महश भी खशी स फला नही समा रहा था कि यही खशी उस ल डवी।पत्रजन्म की खशी की अधिकता

©Veena Vij

स उसका मानसिक सतलन बरी तरह असयत हा गया।डाक्टर्स न महश का पागलखान भज दिया।पल भर म सब कछ छिन्न भिन्न हा गया।नवजात शिश का आचल म लपट कविता फिर स जीवन क दाराह पर आ खडी हई थी।उसकी ननद जठ जठानी व अन्य सभी अपन अपन घर म मस्त थ।काफी साच समझकर कविता न अपन शिश का मा की गाद म डाल दिया।स्वय ज बी टी करन लग गई।टनिग खतम हान पर उस टीचर की नाकरी मिल गई।साथ ही रहन का सरकारी क्वार्टर।आत्मविश्वास स भरी कविता अपन नए जीवन म दृढ सकल्प हा कर्त्तव्य करन की परणा लकर बढ चली।

समय समय पर वा महश का दखन पागलखान भी जाती रहती।साथ म उसक लिए कपड खान का सामान व दवाइया भी ल जाती।वा साधारण मनःस्थिती रहन पर पत्र का हाल भी पछता।कविता दखती उसका ईलाज ठीक चल रहा ह न।वक्त न ता हर हाल म चलत ही जाना ह सा इसी तरह आठ साल बीत गए।इस बार कविता का बलावा आया कि महश अब ठीक ह आकर ल जाए।कविता पफल्लित मन स पिता आर पत्र क मिलाप क हर्षित क्षणा की कल्पना करती महश का लकर मायक पहची।पिता स पत्र नवीन का परिचय हआ।नवीन क चहर पर पिता क लिए एक पश्नचिन्ह जा सदा स था आज उस अपना उत्तर मिल गया था।नवीन अपन पिता स लाड करता व बतियाता फला न समाता।महश का भी माना जीवन की अमल्य निधी मिल गई थी।पत्र का सान्निध्य पिता क लिए अभिशाप बन सकता ह यह किसी न न साचा।इस बार की खशी स महश इतना असयत हआ कि इस बार उसका मानसिक सतलन जा बिगडा ता उम भर वा उसस बाहर नही निकल पाया।सब काशिश बकार चली गई।पागलखान म उसस मिलन की भी मनाही कर दी गई।मिलन आता भी कान था।भाग्य क हाथा लटी कविता या फिर कभी कभार उसका भाई।पिता ता कविता क हालात का दाषी स्वय का मानकर कब स दनिया स चलता कर गए थ।इस बार कविता पत्र का साथ ही ल गई।जब वह पढाकर वापिस आती ता नवीन का घर की सीढी पर बठ हाम वर्क करत पाती।बच्च एक सीमा क बाद बडा की मजबरी सघ लत ह।उसन नवीन का कभी कछ नही बताया।पापा का दारा पडा दखकर वह एसा सहमा कि कभी भी मा स कछ पछ नही पाया।

आज आज महश की मात की खबर आन पर कविता छट्टी लकर चपचाप अकली ही वहा गई।अस्पताल क स्टाफ क साथ जाकर उसका दाह सस्कार करक वह सीधी मायक की बस पकडकर मा क घर पहची।उस इस रूप म दखकर मा बहन व भया भाभी हतपभ स रह गए।पश्ना की बाछार चारा आर स उस पर गिर रही थी।किन्त वह पत्थर की शिला बनी बठी थी।उसक भीतर क सन्नाट म उसकी रूधी सास थी।आज पनः वहा चप्पी क रान का शार था जहा बाहर का शार सनाई नही दता था।वह निर्विकार मा की उसी दहलीज पर बठी अपन सम्पर्ण जीवन क सनहर वर्षा की जलती आग की ठडी पडी राख पर रीती गठरी बनी न हसी न राई।

वीणा विज फ़ुदित√

©Veena Vij